राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

संशोधित मूल्य रु. 10/-
राज्याज्ञा सं. (6) क्र.सं. 93
दिनांक 3-12-97 के अनुसार
प्रभारी अधिकारी
रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०६

शङ्करीसङ्गीतम्

[जगदम्बाचरित्रम्]

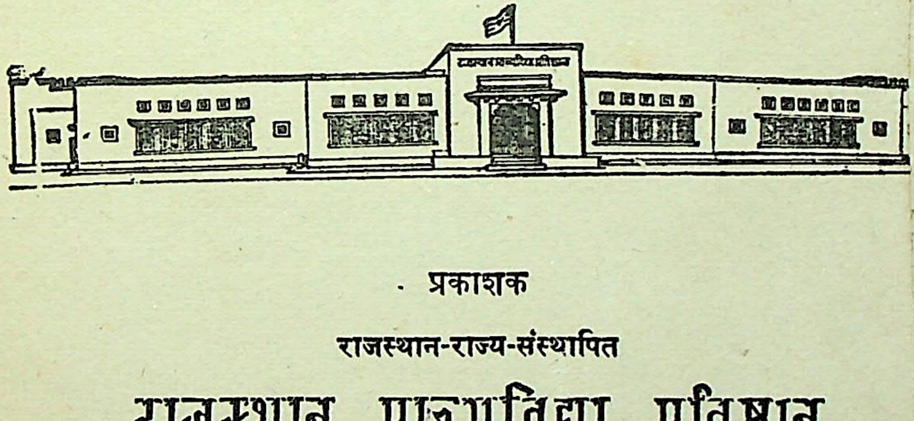

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०६

कविश्रीजयनारायणप्रणीतम्

शङ्करीसङ्गीतम्

[जगदम्बाचरित्रम्]

सम्पादक

गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित

वरिष्ठ शोधसहायक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

१९६९ ई०

प्रथमावृत्ति ७५०　　　　मूल्य १.२५

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध

विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्टग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०६

शङ्करीसङ्गीतम्

[जगदम्बाचरित्रम्]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०२५.   भारत राष्ट्रीय शकाब्द १८९०

मुद्रक : जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिन्टर्स, जोधपुर.

प्रधान-संपादकीय

'शङ्करीसङ्गीतम्' को अपने सुयोग्य पाठकों के हाथों में रखते हुये, मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। यह पुस्तक हमारी उस नवीन योजना के अन्तर्गत प्रथम प्रयास है जिसके अनुसार प्रतिष्ठान में संगृहीत लघुकृतियों के संपादन और प्रकाशन को तीव्रता प्रदान की जायेगी।

जैसा कि संपादक महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा है, यह कृति संस्कृत की गेयकाव्यपरम्परा में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। शंकरी-नाम से महाशक्ति को आधार बनाकर यह काव्य रचा गया है। 'शम्' शब्द ऋग्वेद से लेकर अब तक परम सुख, परम शान्ति, परम आनन्द अथवा परम कल्याण का बोध कराता आ रहा है। आज भी हम 'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये' ऋग्वैदिक मंत्र पढ़ कर दिव्य आप: से 'शम्' की कामना करते हैं। जिस सिंधुघाटी को प्राय: अवैदिक माना जाता है उसमें भी 'शम्' को ही जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। इसीलिये मोहेनजोदरो के एक मुद्रालेख में 'शं माम् न रत्नधा' कहकर रत्नदायिनी की अपेक्षा शंकरी की महत्ता को स्वीकार किया गया है। सिंधुघाटी के अन्य मुद्रालेखों में, इसी देवी को 'उमा' नाम दिया गया है, क्योंकि वह 'उ' नामक ज्योति की निर्मात्री तथा प्रदात्री है। इसीलिये उपनिषद् में ज्योतिर्मयी 'उमा हैमवती' की कल्पना मिलती है। यही उमा इन्द्र को तुरीय ब्रह्म (यक्ष) का पता बताती है।

अस्तु, यह 'शङ्करीसङ्गीत' उस दिव्य महाशक्ति का संगीत है जो हमारे भीतर और बाहर सर्वत्र व्याप्त है और जिसको आगमों में महात्रिपुरसुन्दरी भी कहा जाता है। आशा है, सहृदय पाठक इसको पढ़कर आनन्द-लाभ करेंगे।

शङ्करोतु शङ्करी

माघ शुक्ला पूर्णिमा, सं० २०२५,

जोधपुर.

—फतहसिंह

विषयानुक्रमः

		पृष्ठाङ्क
१.	भूमिका	१- ६
२.	गोत्रोत्थानं नाम प्रथमः पटलः	७-१०
३.	बाल्यलीलावर्णनं नाम द्वितीयः पटलः	१०-१२
४.	नारदसमागमो नाम तृतीयः पटलः	१२-१४
५.	मेनाविलापो नाम चतुर्थः पटलः	१४-१६
६.	काशीप्रस्थानं नाम पञ्चमः पटलः	१६-१८
७.	वसन्तवर्णनं नाम षष्ठः पटलः	१८-२०
८.	शिवसम्भाषणं नाम सप्तमः पटल	२०-२१
९.	एकाम्रवनगमनं नाम अष्टमः पटलः	२२-२४
१०.	गोष्ठवर्णनं नाम नवमः पटलः	२४-२५
११.	विरहवर्णनं नाम दशमः पटलः	२५-२७
१२.	दूतीसंवादो नाम एकादशः पटलः	२७-२८
१३.	रासवर्णनं नाम द्वादशः पटलः	२९-३१
१४.	ग्रन्थकर्तृ प्रशस्तिः	३२

भूमिका

ग्रन्थनाम

कवि जयनारायण ने प्रस्तुत लघुकाव्य का नाम 'शङ्करीसङ्गीतम्' रखा है जो कि प्रत्येक पटल की पुष्पिका 'इति श्रीशङ्करीसङ्गीते गोत्रोत्थानं नाम प्रथमः पटलः' आदि तथा अन्तिम पटल में उल्लिखित प्रशस्ति-पद्य से स्पष्ट है:—

सप्रज्ञाविपयानुरूपचरितं क्षेमङ्करं यन्मया,
सद्भक्ताय जयादिना द्विजनुषा नारायणेनाऽचिरात्।
क्रूराकारणदुर्विवादघटनात् पर्य्यस्यतां शङ्करी-
सङ्गीतं तदिदं सतां वितनुतां संश्रृण्वतां श्रीततिम् ॥१०॥

ग्रन्थारम्भ में कवि ने 'जगदम्बा-चरित्रम्'[1] का उल्लेख किया है। सङ्गीत के माध्यम से शङ्करी अर्थात् शङ्करपत्नो पार्वती जगदम्बा के विमल चरित्र का वर्णन १२ पटलों में होने से इस काव्य का नाम 'शङ्करीसङ्गीतम्' सार्थक ही प्रतीत होता है।

कवि जयनारायण

कवि का सत्ताकाल क्या है, वह कहाँ का निवासी और उसकी कौन-कौन सी कृतियां हैं? आदि ऐसे ही अनेक प्रश्नों का समाधान साधनाभाव के कारण नहीं किया जा सकता। कवि ने इस काव्य के १२ वें पटल की प्रशस्ति में अपने पूर्वजों की १७ पीढ़ियों का तथा स्वयं के पौत्रों का उल्लेख अवश्य किया है, किन्तु ग्रन्थ का रचनाकाल नहीं दिया है। फिर भी रचना-शैली और ग्रन्थोद्धृत राग-तालों के नामोल्लेख के आधार पर अनुमानतः कवि का समय विक्रमी १९ वीं शताब्दी माना जा सकता है। कवि जयनारायण ब्रह्मकुलीय कृष्णचन्द्र का पुत्र था। कवि द्वारा वर्णित वंशावली इस प्रकार है—

---

१. अथवाऽस्मिन् प्रयत्नो मे निष्प्रत्यूहं फलिष्यति।
जगदम्बाचरित्रं हि प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ॥ प्रथम पटल—पद्य ३

ब्रह्मकुलीय शिर
|
उधो
|
कोच
|
आभ
|
यश
|
उदय
|
वाणेश्वर
|
विश्वनाथ
|
कंसारि
|
श्रीधर
|
यदुनाथ पाठक
|
गोपीकान्त
|
रामकृष्ण
|
राजेन्द्र
|
विष्णुदेव

दुलाल — कन्दर्प

कन्दर्प
|
कृष्णचन्द्र
|
जयनारायण
|
कालीशङ्कर

काशीनाथ सत्यप्रसाद सत्यकिङ्कर सत्यचरण घोषाल सत्यशरण सत्यप्रसन्न सत्यभक्त

कवि ने प्रशस्ति पद्य ७ में छः पौत्रों का उल्लेख किया है, किन्तु पद्य ९ में 'इति षण्णां कुमाराणां सत्यभक्तस्तु सप्तमः' कह कर सातवें पौत्र सत्यभक्त का निर्देश किया है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि सत्यभक्त पालित-पौत्र हो।

काव्यपरम्परा एवं कथासार

प्रस्तुत लघुकाव्य गेय-काव्य-परम्परा में आता है। सङ्गीतप्रधान गेय-काव्य का रचना लक्षणप्रधान काव्य-रचना की अपेक्षा कवि के लिये अधिक कठिन होती है; क्योंकि कवि को गेयकाव्यों में काव्य-लक्षणों के साथ-साथ सङ्गीत-शास्त्र के बन्धन (कोमल, मध्यम, तीव्रादि स्वरों एवं विविध तालों) का भी सम्यग् रूप से निर्वाह करना पड़ता है। यही कारण है कि गेय-काव्य-कृतियाँ अत्यल्पमात्रा में ही प्राप्त होती हैं।

गेयकाव्यों में सर्वप्रथम कृति महाकविजयदेव (१२ वीं शताब्दी) द्वारा प्रणीत लोकविश्रुत 'गीतगोविन्दम्' प्राप्त होती है। इसके पश्चात् तो कवि जयदेव की पद्धति का अनुकरण कर अनेक कवियों ने गेय-काव्यों की रचनायें की हैं जिनमें से मुख्य-मुख्य रचनायें विशेषतः उल्लेखनीय हैं –

१. कविसोमेश्वररचिता कृष्णगीतिः[1]
२. प्रबोधानन्दसरस्वतीप्रणीतं माधवसङ्गीतम्[2]
३. कविकलानिधिश्रीकृष्णभट्टविरचितं रामगीतम्[3]
४. रामभट्टकृतं गीतगिरीशम्[4]
५. भानुदत्तमिश्ररचितं गीतगौरीशसङ्गीतम्[5]
६. विश्वनाथसिंहदेवकृतं संगीतरघुनन्दनम्[6]
७. चारुकीर्त्तिकृत गीतवीतराग[7]

---

१. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित।
२ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में प्राप्त।
३. इसकी प्रति मुनि कान्तिसागरजी के पास प्राप्त है।
४. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में प्राप्त।
५. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में प्राप्त।
६ इसका सम्पादन डॉ० दशरथ शर्मा कर रहे हैं, और यह शीघ्र ही रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर से प्रकाशित होने वाला है।
७. जैन सिद्धान्त भवन, आरा में प्राप्त।

८. विनयविजयकृत शान्तसुधारस[1]

९. पुण्यशीलगणिकृतानि चतुर्विंशति-जिनस्तवनानि[2]

१०. शिवचन्द्रोपाध्यायकृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि आदि स्फुट रचनायें

कवि जयनारायण शङ्करी (पार्वती) को केवल शङ्करपत्नी के रूप में ही स्वीकार नहीं करता है, अपितु वह शङ्करी को त्रिलोकजननी, जगदम्बा, मीन-कच्छप - नरसिंह - वामन - परशुराम - रावणारि रामचन्द्र - कृष्ण - कल्कि आदि अवताररूपा, दुर्गा, महालक्ष्मी, भैरवी, बगलामुखी, आद्यशक्ति, पराशक्ति, ज्योतिर्मयी, चिन्मयी शक्तिस्वरूपा भगवती के रूप में भी स्वीकार करता है।

कवि ने प्रस्तुत काव्य के गोत्रोत्थान, बाल्यलीलावर्णन, नारद-समागम, मेनाविलाप, काशीप्रस्थान, वसन्तवर्णन, शिवसम्भाषण, एकाम्रवनगमन, गोष्ठवर्णन, विरहवर्णन, दूतीसंवाद एवं रासवर्णन-नामक १२ पटलों में शङ्करी (पार्वती) के जन्म से लेकर शङ्कर से विवाह एवं रासलीला-पर्यन्त जिस चरित्र-कथा का वर्णन सहज एवं सुललित वाणी में आबद्ध किया है उसका सारांश इस प्रकार है—

हिमालय की पत्नी मेना की कुक्षि से आद्यशक्ति ने जन्म-धारण किया। बाल्यक्रीड़ा करती हुई पार्वती क्रमशः युवावस्था को प्राप्त हुई। एक समय विचरण करते हुए महर्षि नारद हिमालय के यहाँ पहुँचे और उन्होंने भगवान् शङ्कर के स्वरूप का वर्णन किया, जिसे सुनकर पार्वती शिव को प्राप्त करने के लिये उत्कण्ठित हो गई और वाराणसी जाने के लिये आतुर हुई। पार्वती की अभिलाषा को सुनकर माता-पिता, सखीजनों और पौरजनों को महादुःख हुआ और उन्होंने उसे रोका भी, किन्तु पार्वती ने काशी के लिये प्रस्थान कर ही दिया। काशी पहुँच कर पार्वती ने ब्रह्मचारिणी का रूप धारण किया और वह शिव को प्राप्त करने के लिये उग्रतम तपश्चर्या करने लगी। शम्भु ने अन्यरूप में आकर पार्वती की परीक्षा ली और उसे शिव-प्राप्ति की अभिलाषा से विमुख करने के लिये संवाद-सम्भाषण भी किया। पार्वती अडिग रही और वहाँ से एकाम्रवन में जाकर शङ्कर की आराधना करने लगी। पार्वती की एकनिष्ठ तपस्या एवं लगन को देखकर शङ्कर प्रसन्न हुए और पार्वती को अर्द्धाङ्गिनी के रूप में स्वीकार कर रमण-लीला में प्रवृत्त हुए।

---

१. महोपाध्याय विनयसागर द्वारा सम्पादित एवं सुमति सदन, कोटा से प्रकाशित।

२. म० विनयसागर संग्रह, कोटा में प्राप्त।

कवि-वैशिष्ट्य

इस लघु रचना को देखते हुए यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि जयनारायण कवि का व्याकरण, कोष एवं लक्षणशास्त्र पर अच्छा अधिकार था। यह रचना दोषरहित और सुललित सालङ्कार शब्दावली में गुम्फित की गई है। कवि ने इस लघु-काव्य में निम्नलिखित २२ छन्दों का प्रयोग किया है—

अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रोपजाति के १४ भेदों में से—कीर्त्ति, वाणी, शाला, हंसी, भद्रा, प्रेमा, ऋद्धि, बुद्धि वंशस्थ, वंशस्थेन्द्रवंशोपजाति के १४ भेदों में से—शिशिरा, कुमारी द्रुतविलम्बित, रथोद्धता, वसन्ततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।

संस्कृत-साहित्य के साथ-साथ कवि का संगीत-शास्त्र पर भी पूर्ण अधिकार था। यही कारण है कि इस छोटे से काव्य में कवि ने निम्नलिखित २५ रागों और ९ तालों का आयोजन कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है।

राग भैरव, ललित, विभास, रामकेलि, षट्, श्री, आशावरी, तोडी, काफी, पूरवी, गौरी, वसन्त, यमन, कानोड, खम्माच, धन्यश्री, चिडी, सारङ्ग, हम्मीर, अडाना, विहाग, जयजयन्ती, केदार, परज और मालकोष।

ताल—चौताल, मूलताल, मध्यमानताल, टोटचौताल, रूपकताल, तेयोट-ताल, हेटचौताल, खवेरावादी ताल तथा सूरफाक ताल।

इसके अतिरिक्त कवि जयनारायण केवल विशिष्ट कवि ही नहीं, अपितु वह पराम्बा-शङ्करी का अनन्य उपासक एवं आगमशास्त्र अर्थात् तंत्र-शास्त्र का मर्मज्ञ विद्वान् भी था जैसा कि ग्रन्थारम्भ में की गई दश, महाविद्यात्मका भगवती की गीत-स्तुति से एवं ग्रन्थान्त में उद्धृत अन्तिम गीत के २ रे पद्य से स्पष्ट होता है—

लयसमरे जलराशौ रक्षसि मग्नं, जगदुपकृतये वेदमभग्नम् ॥१॥ (प्र०प०)
धूमावति मीनदेहे जय जगदम्ब शिवे ! (ध्रुवम्)
नानापथविकलानां जगतीनां च भवन्तौ,
सदयनमुपदेष्टारौ श्रुतमिदमागममुक्तम्।
तत्किं नो दिशतोऽस्मान् प्रति कापथमनुयातान्,
कल्मषकण्टकदलितान् मृषयत इति तदयुक्तम् ॥२॥ (द्वि॰प०)

प्रति-परिचय

प्रस्तुत 'शङ्करीसङ्गीतम्' की एकमात्र हस्तलिखित प्रति राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के हस्तलिखित-ग्रन्थ-संग्रहालय में उपलब्ध है। इस प्रति का विवरण निम्नलिखित है—

ग्रन्थाङ्क—३६३७२
नाम—शङ्करोसङ्गीतम्
कर्त्ता—कवि जयनारायण
आधार—कागज
लिपि—देवनागरी
साइज—२८३/४ सी० एम०×१३३/४ सी० एम०
पत्र—१६
पंक्ति—११
अक्षर—३८
भाषा—संस्कृत
समय—विक्रम संवत् १९१७ जोधपुर।
विशेष—लिपिकार की अज्ञता के कारण प्रति शुद्ध नहीं है। दुर्लभ्य एवं अन्यत्र अप्राप्य कृतियों में से है।

उक्त काव्य का सम्पादन एकमात्र इसी प्रति के आधार पर किया गया है और प्रतिगत पाठ का यावच्छक्य यथामति संशोधन कर दिया है। पाठकों की सुविधा के लिये संशोधित पाठ मूल रूप में और अशुद्ध पाठ पादटिप्पणियों के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

हर्ष का विषय है कि राजस्थान-प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान के निदेशक समादरणीय डॉक्टर श्रीफतहसिंहजी के निर्देश एवं निदेश का ही फल है कि यह 'शङ्करीसंगीतम्' काव्य विद्याविनोदी एवं संगीतरसज्ञ विद्वानों के कर-कमलों में प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि इतः पूर्व अत्यन्त दुर्लभ्य होने के कारण जिज्ञासा एवं गवेषणा का विषय बना हुआ था। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि लोककल्याणसन्धात्री माता शङ्करी के दिव्यचरित्रात्मक इस काव्य को पढ़ कर काव्यप्रेमी एवं श्रद्धालु विद्वान् सन्तोष तथा परमानन्द का अनुभव करेंगे।

—गोस्वामी लक्ष्मीनारायण दीक्षित

कविश्रीजयनारायणप्रणीतम्

शङ्करीसङ्गीतम्

[जगदम्बाचरित्रम्]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ दुर्गायै नमो नमः ॥

आनन्दतुन्दिलपुरन्दरमन्दभुक्त—
मन्दारदामविगलन्मकरन्दसिक्तम् ।
वन्दे गिरीन्द्रतनयाचरणारविन्दं,
योगीन्द्रवृन्दहृदयभ्रमरावलीढम् ॥१॥

क्व त्रिलोकजननीचरित्रकं, क्वाऽपि मन्दविषया मतिर्मम ।
भूहिता ह्यवचिषुरस्म्यहं, नाकशाखिकुसुमानि[2] पाणिना ॥२॥

अथवाऽस्मिन् प्रयत्नो मे निष्प्रत्यूहं कलिष्यति ।
जगदम्बाचरित्रं हि प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ॥३॥

चौताल भैरवरागः

कलिभयमपहर करुणां सुवितर सकलभुवनकृतसेव ।
त्वयि मम नतिततिरविरतिरतिगतिहीनगतिद गुरुदेव ॥१॥४॥
दशशतदलजलजातनिकेत, जय जय परमब्रह्मद नाथ । ध्रुवम् ।
त्वममरतरुरिति गदित इह, जगति कलयसि याचककामम् ।
विपदमतिशमय मम परिपूरय, हृदभिलषितमविरामम् ॥२॥५॥
तव करुणालव-भवबोधनमव, बाधितविषयविकारम् ।
भवनिगडदलनकारणमतुलनमागमकृतमिति सारम् ॥३॥६॥
जयनारायण इति भणति, शमनदमनमखिलसुखनिलयम् ।
गुरुपदकमलं रसमयममलं, मधु पीयन्तं मम हृदयम् ॥४॥७॥

---

१. हि अवचेतुमिच्छुरित्यर्थः ।
२. पुस्तके तु 'नाकसाखि०' इति पाठः ।

मूल-ताल भैरवरागः

लयसमरे जलराशौ रक्षसि मग्नं, जगदुपकृतये वेदमभग्नम् ॥१॥८॥
धूमावति मीनदेहे जय जगदम्ब शिवे ! ॥ ध्रुवम् ।
तव पृष्ठे विपुले सचराचरकीर्णा, सन्ततमस्ति धरणिरविशीर्णा ॥२॥९॥
बगलामुखि कमठरूपे जय जगदम्ब शिवे ! ॥ ध्रुवम् ॥
खरनखरं तव करकमलं परमकृशं, हिरण्यकशिपुं दारयति भृशम् ॥३॥१०॥
छिन्नमस्ते नृहरितान जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
करुणारसमपहाय वलिं[1] निजदासं, अमरकृते गमयसि कणिवासम्[2] ॥४॥११॥
भुवनेश्वरि वामनतान जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
नृपकुलरुधिरजलैर्जगदविदितसीमं, शमयसि कोपानलमतिभीमम् ॥५॥१२॥
सुन्दरि धृतभार्गवतान जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
हत्वा दशवदनं युधि तदनय[3]-दुःस्थं, निखिलं भुवनं जनयसि सुस्थम् ॥३॥१३॥
तारे धृतरामरूपे जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
वक्षसि कराम्बुरुहेण हलं शितधारं, रिपुगणदेहक्षत्रविदारम् ॥७॥१४॥
भैरवि धृतहलिशरीरे जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
स्वकथितवेदमहो कथयसि विपरीतं, त्रिजगज्जनयसि मोहपरीतम् ॥८॥१५॥
महालक्ष्मि विश्वरूपे जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
समरशिरसि सबलं विनिहंसि च कंसं, परमं न [हि] दयसे यदुवंशम् ॥९॥१६॥
श्यामे धृतकृष्णरूपे जय जगदम्ब शिवे ॥ध्रुवम् ।
हंसि म्लेच्छचयान् विनिधृत्य कृपाणं, भूत्वा द्विजतनयो बहुशाणम् ॥१०॥१७॥
दुर्गे धृतकल्किकाये[4] जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ।
श्रीजयनारायणभणितं रमणीयं, शृणुत बुधाः सुरनरकमनीयम्[5] ॥११॥१८॥
तारिणि धृतदशविधतान जय जगदम्ब शिवे ॥ ध्रुवम् ॥

वेदोद्धारं धरित्रीधरणमसुरहृद्दारणं नागलोके,
सम्प्रस्थायं बलेश्च क्षितिपतिविजयं निर्जयं रावणस्य ।

---

१. पुस्तके—'बलि' इति पाठः ।
२. पाताललोकमित्यर्थः ।
३. पुस्तके—'तद्वनय' इति पाठः ।
४. पुस्तके—'धृत्य०' इति पाठः ।
५. पुस्तके—'सुरनरकमपीयम्' इति पाठः ।

आदानं व्याच्छलस्य(?) श्रुतिपथसमुपालम्भनं कंसनाशं,
म्लेच्छोद्ग्रासं क्रमाद्[1] या रहसि कृतवती तां नमाम्याद्यशक्तिम् ॥१९

मूलताल ललितरागः

भवभयभञ्जन-जनहृद्रञ्जन[2]-मञ्जुलचरणसरोजे !
नखरसुधाकरकरपरिवारितमायातिमिरसमाजे ! ॥१॥२०
जय जय सुरार्च्चिते ! । ध्रुवम् ।
त्रिभुवनभवन-विपालन-विलयन-लीलाकारणभूते !
कृतनिजचारण-दुःखनिवारणि[3] करुणानिकरपरीते ! ॥२॥२१
मृगपतिवाहिनि मुक्तिविधायिनि निर्गुणसगुणकलोले !
असुरविदारण-सुरकुलपालन-विरचितबहुभवलीले ! ३॥२२
कथयति सेवकजयनारायण इह भवसागरभीतः ।
कृपया मामभितारय तारिणि ! भजनरहितमिति मातः ! ॥४॥२३

प्रातः प्रेमभरालसा निजसखीमालासमेता किल,
मेना भूधरराजधर्मगृहिणी निद्रावती पार्वतीम् ।
लीलादेहविधारिणीं भगवतीं ज्योतिर्मयीं चिन्मयीं,
संप्रावोधयताऽमिताक्षरयुतैर्वाक्यैर्जगन्मङ्गलैः ॥२४

मध्यमानताल विभाय(स) रागः

तव पदपल्लवनखरतुलनमिव नैव समेत्यकलङ्की[4] ।
जलधिपयसि परिमज्जति शीतकरः परिभवशङ्कि ॥१॥२५
शशधरवदने खञ्जननयने परिहर शयनमिदानीम् । ध्रुवम् ।
किसलयलोहितविमलचरणतलतुलनामाप्तुमिवैषः[5] ।
दयसमुखे तपनं तव परमधिगच्छति विद्रुमभासः ॥२॥२६
मृदुपवनावलिकम्पितचम्पकमालाहिमकणभारम् ।
तव चरणाङ्गुलिगमित-तिरस्कृतिरिव सृजतीक्षणनीरम् ॥३॥२७

---

१. 'क्रमाद्' इति पाठः पुस्तके ।
२ 'जनमनरञ्जन' इति पुस्तके ।
३. पुस्तके-'०निवारण' इति पाठः ।
४. 'सम्पेत्य०' इति पुस्तके ।
५. '०तुलनामाप्ति०' इति पुस्तके पाठः ।

कूजति[1] कोकिलकुलमतिमञ्जुलमधिविपिनं वनदेवैः ।
वच इव तव परिबोधजनकमभियुक्तं मधुरविरावैः ॥४॥२८
भवनबहिः परितिष्ठति वत्से ! तुल्यवयः[2] पुरबालम् ।
तव रचिताञ्जलिखेलनमिच्छत्युपहृतपुष्करमालम् ॥५॥२६
श्रीजयनारायणभणिताखिलमेनावचनमुदारम् ।
परिकलयत इह दुर्गा निदिशतु दुर्गभवार्णवपारम् ॥६॥३०

इत्याकर्ण्य गिरं प्रबोधजननीं मायाजनन्याः शुभां,
विश्वेषां जननी मुखाब्जरुचिभिर्विद्योतयन्ती दिशः ।
[3]ईषत्काम्यवती सती त्रिजगतीचैतन्यरूपा मुहुः,
स्मृत्वेशं शयनात् समुत्थितवती पायाज्जगत्पार्वती ॥३१

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते गोत्रोत्थानं नाम प्रथमः पटलः ॥१॥

——

द्वितीयः पटलः

ततः समाहृत्य शुभात्मकानि, द्रव्याणि रत्नासनसंस्थितां ताम् ।
पुराङ्गनाभिः सह शैलजाया, निर्मञ्जयामास[4]यथाभिलाषम् ॥३२
पद्मालया किञ्च पुलोमजेयं, श्रेयःस्तुतिः किञ्च हिमालयस्य ।
शरीरिणीं तामवलोक्य सर्वा, नगादिनो[5] विस्मयमापुरीषत्[6] ॥३३
[7]नेत्राम्बुभिस्तत्पुरसुन्दरीणां, चितं तदंनं (तदङ्गं?) क्रमशः पतद्भिः ।
आक्षेपसूत्रेण विनाऽपि मालामिन्दीवराणां[8] रचितां बिभर्ति ॥३४

---

१. 'विकुजति' इति पुस्तके ।
२. 'तुल्यवयोः' इति पाठः ।
३. 'इषद्‌कास्यवती' इति पुस्तके ।
४. 'निर्मञ्जुयामास' इति पुस्तके ।
५. 'नगादिना' इति पाठः ।
६. '०मापुरिषं' इति पुस्तके ।
७. 'मंत्रजजं' इति पुस्तके । 'नेत्राञ्जनं' रित्यपि पाठः संभाव्यः ।
८. '०मिन्दीवराणी' इति पुस्तके ।

मुक्त्वा हि विद्वेषि सुधाकरस्य, सरोरुहं काव्यविदो वदन्ति ।
मुखेन्दुमालोकयतां हि तस्या जहुर्द्दगङ्गानि निमीलनानि ॥३५

यस्या वैभवलेशमात्रकथने वेदाः परं कुण्ठिता
ब्रह्माद्या यदनुग्रहप्रणयिन [1] दौवारिकत्वं गताः ।
पित्रोः प्राज्यमुपार्जितोग्रतपनात्[2] पूर्णं विधातुं फलं,
भक्ताधीनतया तया बहुविधा [3]लीलास्ततश्चक्रिरे ॥३६

मध्यमान-ताल रामकेलिरागः

मत्तकरीन्द्रसुमन्दगता दरदोलितसुन्दरवासाः ।
गायति चामितकण्ठगुणं पिककण्ठविकुण्ठनभाषा ॥१॥३७
हिमगिरिराजसुता ललिता नृत्यति नववनितालियुता । ध्रुवम् ।
चञ्चलनूपुरमञ्जुलशिञ्जितगञ्जितहंससमाजा ।
अञ्जनगञ्जनखञ्जनगर्वविखर्वणनयनसरोजा ॥२॥३८
मन्दगलच्छ्रमवारिलवादरविलुलितललितशरीरा ।
प्रातरिवानिलकम्पितकल्पलतापरिगलिततुषारा ॥३॥३९
चारुसखीगणमध्यगता रुचिरोचितभुवनविताना ।
तारापटलविमण्डलिता शशिलेखा हर्षविधाना ॥४॥४०
वादयते मृदुवेणुवरञ्जननी-विनिहितनवनीतम् ।
अत्ति ददाति सखीवदनाब्जे चार्द्धमधुररसपूतम् ॥५॥४१
वर्णितमेतदुमाचरितं ललितं सततं परिपूतम् ।
श्रीजयनारायणकविना कुरुतामति जगतामतिशातम् ॥६॥४२

तां दृष्ट्वा हृष्टचेता हिमगिरिवनिता जन्मजन्मार्जितानां,
पुण्यानां पूर्णमात्रं फलमिव सहसा नेत्रधारां वहन्तीम् ।
नृत्यन्तीं प्राङ्गणान्ते[4] स्मितरुचिरुचिरां पद्मजाद्यैरवेद्यां,
प्रोच्चैः प्रोवाच वाचोऽचलकुलतिलकं पूर्णकामा हिमाद्रिम् ॥४३

---

१. '०यदनुग्रह०' इति पाठः ।
२. '०तपनां' इति पुस्तके ।
३. 'लीलां' इति पाठः ।
४. '०मन्दगतां' इति ।
५. 'प्राङ्गनास्ते' इति पुस्तके ।

होटचौताल खट(षड्)रागः

ताण्डवलोलसुलोहितकिरणपदाम्बुजविरचितभूषम् ।
उदयशिखरितटमिव नवसमुदिनदिनपतिवितविलासम् ॥१॥४४

पश्य ममाङ्गनमुमया शोभितमचल ! विचित्रमिदम् ॥ ध्रुवम् ।

चारुचरणविनिवेशनलाञ्छनलाञ्छितमध्यविभागम् ।
अविरलविकसितनिर्मलशतदलचितमिव शरदि तडागम् ॥२॥४५

[1]काञ्चनपीतमयूखविकाशिततनुलतया समुपेतम् ।
अम्बरमिव रुचिरं परिखेलितसुस्थिरचपलाजातम् ॥३॥४६

स्फुरदभिराममरीचिचयाननमण्डलया कृतचारम् ।
शशधरलेखावयवदिवापि[2] मनोहरविहितविहारम् ॥४॥४७

श्रीजयनारायणकविना परिवर्णितमेतदुदारम् ।
सततं श्रवणपुटेन निपीतं सुखयतु कोविदवारम् ॥५॥४८

संसारार्णवपारसेतुरखिलानन्दैककेलिस्थली,
[3]खेदच्छेदिसमस्ततीर्थनिलयो मोक्षस्य मुख्यायनम् ।
[4]सर्वाभीष्टफलैकसंवितरणश्रीकल्पभूमीरुहः,
श्रीदुर्गाचरणारविन्दमखिलं पायात् जगत्सन्ततम् ॥४९

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते बाल्यलीलावर्णनं नाम द्वितीयः पटलः ॥ ॥

तृतीयः पटलः

विलोक्य तस्या भुवनाद्भुतानि, मुदान्वितो बाल्यविचेष्टितानि ।
अनाप्तवल्लोचनयुग्मतृप्ति, जगाद मेनामथ शैलराजः ॥५०

मध्यमान-ताल श्रीरागः

वादयामि मृदुमधुरमृदङ्गं, त्वमपि कलय करतालविभङ्गम् ॥१॥५१
अयि कृतसुकृतचये गौरीं पुनरपि नर्त्तय सफलय मम नयने ।ध्रुवम् ।

---

१. '०पीतपयूष ' इति पुस्तके ।
२. '०लेखायवदिवापि' इति पाठः ।
३. 'खेदच्छेदि०' इति पाठः ।
४. 'सर्वाभीष्टफलेष०' इति पुस्तके ।

जन्मसु वहुषु तपः कति तप्तं, तस्य मया फलमिदमभिप्राप्तम् ॥२॥५२
कोटिकोटिकुलमजनि पवित्रं, कामदुघं मम सवलचरित्रम् ॥३॥५३
तोषितविप्रगणाशीर्गदितं, नूनमिदानीं तन्मम फलितम् ॥४॥५४
धरणितले न कृतं कति सुकृतं, चरणस्पर्शनसुखमनुभूतम् ॥५॥५५
श्रीजयनारायणकृतगीतं, भक्तजनं कुरुतामतिप्रीतम् ॥६॥५६

इति जनकजनन्योर्वाञ्छितं पूरयन्ती,
मदनमथनजाया मायया मोहयन्ती ।
त्रिभुवनमनिशं सा दोहिनी ब्रह्मरूपा,
हिमवति कति कालान् पर्वते संनिनाय ॥५७

तस्याः समीपे किल नारदोऽथ, वाराणसीनाथनिदेशवर्ती ।
अभ्याययौ प्रीतमना महर्षिर्गायंस्तदीयं चरितं महत्या ॥५८
कृताञ्जलिर्भक्तिनतोत्तमाङ्गः, स बाष्पधारापरिवाहिनेत्रः ।
तुष्टाव तां हृष्टमना गविष्ठं, स्पष्टार्थवाग्भिर्वदतां वरिष्ठः ॥५९

चौताल आशातुयारीरागः

अव्ययमेकमनन्तविभवमपि परमं ज्योतिरसि त्वम् ।
स्फटिकमणेरिव गुणसंयोगात् तव जगदम्ब ! बहुत्वम् ॥१॥६०
करुणामयि मयि करुणा भवतु भवानि भवार्णवभीते !
तव चरणशरणविभवे ! ॥ध्रुवम् ।
त्वं प्रकृतिः पुरुषोऽसि च काले सृजसि(से) रक्षसि संहरसि ।
विश्वमशेषमनिशमभिभजतां मुक्तिपदं विदधासि ॥२॥६१
विधिहरिगिरिशमुखा विबुधास्तव जातास्तनुरुहकृपात् ।
क्रमश इमे त्रिजगन्मयरूपे दीपालय इव दीपात् ॥३॥६२
सुकृतवतां सुकृतं जननी त्वं, यागवतामसि यागः ।
तत्त्ववतामसि परमं तत्त्वं, रागवतामसि रागः ॥४॥६३
ध्यायति सकृदपि हृदि यस्तव पदपल्लवमविदितसीमम् ।
गोष्पदमिव भवसागरमाशु स तारिणि ! संतरतीमम् ॥५॥६४
तव नाम[१]-सुधां निपीयति यः सकृदपि त्रिभुवनमातः ! ।
स पुनर्न च जननीजठरोद्भवदुःखचयाननुयातः ॥६॥६५

---

१. 'नामाः' इति पुस्तके पाठः ।

श्रीजयनारायणकविवर्णितमेतदतीवविचित्रम् ।
शृणुत बुधा यदि वो गिरिजाया नन्दयते सुचरित्रम् ॥७॥६६

तस्याकलय्य वचनं मुनिपुङ्गवस्य,
भक्तिप्रयुक्तमथ भक्तजनानुरक्ता ।
साऽऽविर्बभूव पुरतश्च शुभप्रसङ्गै —
रानुग्रहीतुमखिलान्तरभावविज्ञा ॥६७

साष्टाङ्गपातं प्रणिपत्य पत्युरादिष्टमाचष्ट च सन्निकृष्टम् ।
प्रस्थातुमस्यं स तथेति साऽपि, स्वोकृत्य तत्तत्र तिरोबभूव ॥६८

या ब्रह्माण्डमशेषमीश्वरहृषीकेशप्रजेशादिकान्,
प्रासूय क्रमशो नियोजितवती स्वस्वाधिकारेऽनिशम् ।
सा दुर्गाऽखिल[लोक] दुर्गतिहरा स्वर्गापवर्गप्रदा,
नित्या नित्यमनित्यवैभवभवाद्युष्मन्मनः कर्षतु ॥६९

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते नारदसमागमो नाम तृतीयः पटलः ॥३॥

—

चतुर्थः पटलः

भर्तुर्निदेशात् कृतनिश्चयां तां, वाराणसीं गन्तुमथाद्रिजाया[1] ।
[2]वाष्पप्ररोहावलिरुद्धकण्ठा, प्रोवाच चेष्टाभवलोलनेत्रा ॥७०[3]

रूपकताल तुडीरागः

वचननिमीलनजनितं विरहं, नैव पुरा तव सुमुखि सहेऽहम् ॥१॥७१
अयि वत्से ! जीवामि कथं तव विरहे । ध्रुवम् ।
मुखशशिसृतममृतं मातेति, क्व नु मे[4] श्रवणचकोरी पिबति ॥२॥७२
तव वदनाम्बुजमधुवलदङ्गः, जीवति किं मम लोचनभृङ्गः ॥३॥७३

---

१. '०जायाः' इति पाठः ।
२. 'वास्प' इति पुस्तके ।
३. 'चिष्टा' इति पाठः ।
४. 'मम' इति पुस्तके ।

करपराधेर्ममतिदीनां, परिहर[1] जननि ! श्रवणविहीनाम् ।।४।।७४
तव विरहानलविकलितपौराः, सम्प्रति मुक्तभवनपरिचाराः ।।५।।७५
कलयति हंसकुलं विसकवलं, न च शिखिकुलमपि नृत्यति विकलम् ।।६।।७६
शिशुकुलमधुना मातुरुरोजं, पिबति न मलिनितवदनसरोजम् ।।७।।७७
कोऽपि न सहजविषयमाचरति, चित्रितमिव पुरमिदमाभाति ।।८।।७८
श्रीजयनारायणकविभणितिर्बुधहृदि विहरतु मृदुपदविततिः ।।९।।७९

वरमहो विरहाग्निरहर्निशं, दहतु शैलसुते त्वद्दते भृशम् ।
इदमसह्यमतीव च कोऽपि माँ, न हि जगज्जननी जननीं वदेत् ॥८०

बहुजन्मार्जितैः पुण्यपण्यैः क्रीतमिदं धनम् ।
दुर्वारकर्मचौरेण हा हन्ताऽपहृतं क्षणात् ॥८१

शैलाङ्गनामित्यनुशोशुचानां, विवेकहीनां प्रसमीक्ष्य दीनाम् ।
विघ्नेशमाता करुणार्द्रचेताः, प्रशान्तयामास सुशान्तवादैः ॥८२

तेयोटताल काफिरागः

तनयविभवादिविषयं नियतनश्वरम्,
विद्धि जलफेनमिव भज संततमीश्वरम् ।।१३।।८३
जननि विचिन्तय तत्त्वं भावय[2] भावमनित्यम् । ध्रुवम् ।
विश्वमतिमोहमिदमेति मम मायया,
मां स्मरत्विह[3] तु हृदि शान्तिमेति किं तया ।।१४।।८४
यावदुदयति न हृदि तत्त्वमयभास्वरः,
तावदभिभवति जगदविद्यान्धकारः ।।१५।।८५
अम्ब ! मयि भक्तिकरवालखरधारया,
छिन्धि ममताविषमनिगडमतिहेलया ।।१६।।८६
आत्मनि निवर्त्तय च चित्तमतिभास्वरे,
मज्ज[4] सततं परमनित्यमुखसागरे ।।१७।।८७
शिष्टगणमानस-सुतोषमशेषेण,
भणितमिदमावहतु जयनारायणेन ।।१८।।८८

---

१. 'परिहरसि' इति पुस्तके ।
२. 'विभावय' इति पुस्तके ।
३. 'स्मरतु इह' इति पाठः पुस्तके ।
४. 'मन्ज' इति पुस्तके पाठः ।

इत्थं मनः पर्वतराजपत्न्या, निर्जित्य मायामलमत्स्यभावम्[1]।
शान्तोपदेशेन समापदस्याश्चन्द्रोदयेनेव नभं तमिस्रम् ॥१९॥८९

स्व न्ते सन्ततमस्तु वः समुदितं बालारुणश्रीयुतं,
देव्या भव्यपदं पदं तदमलं विभ्राजमानं परम् ।
यन्मुक्ताफलजालनिर्मलतरे वक्षःस्थले शूलिनः,
शोणाङ्का समलज्जयद्विकसितं क्षीरोदनीरोदरे ॥२०॥९०

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते मेनाविलापो नाम चतुर्थः पटलः ॥४॥

——

पञ्चमः पटलः

अत्रान्तरे निजकुलाचरणैकविज्ञाः,
प्रेमातिरेकपुलकाञ्चितचारुगात्राः ।
तां तत्र पौरवनिता अभितः समेता
नानाविधं शुभसमाचरणं प्रचक्रुः ॥१

हेट-चौताल पूरवीरागः

शंखनिनदपरिपूरितगगना[2] मुहुरभिनर्त्तित-[3]नवशिखिनटना ॥१
काऽपि युवतिवरा शिव शिव शिव इति गानपरा । ध्रुवम् ।
विकिरति काऽपि च मङ्गललाजान्, नवलतिकेव सुकुसुमसमाजान् ॥२
काऽपि च धेनुगणानपसव्ये, न्यस्यति पूर्णकलशमपि सव्ये ॥३
काऽपि च विप्रपदाम्बुजरजसा, विकिरति मन्त्रं[4] तस्याः सहसा ॥४
तामभिषिञ्चति काऽपि च सलिलैः, तीर्थभवैरतिशीतलविमलैः ॥५
नीलनिचोल[ल]ता वासयते, घनवलयिततडितं ह्रेषयते ॥६
[5]शशधरधरसुरजननिर्माल्यं, तस्याः शिरसि दधाति च माल्यम् ॥७
श्रीजयनारायणभाणितानि, दधतु त्रिभुवनतोषमिमानि ॥८

---

१. '०मच्छभावमिति' पुस्तके ।
२. 'गगणा' इति पुस्तके ।
३. '०मर्त्तित' इति पाठः ।
४. 'मन्तं' इति पुस्तके ।
५ 'शशधरधरषुजन' इति पुस्तके ।

अतः परं दुष्करमम्बुजाक्ष्या, मयैव वै पथ्यविधानमस्याः ।
इतीव चित्ते विनिधाय राज्ञी, यथेप्सितं सा विदधे ततस्तत् ॥१

मूलताल - गौरीरागः

जितनवतपने मृदुतरचरणे तन्नरुचिचयनिर्जितम् ।
गतमिव शरणं यावकभरणं रचयति लघुराजितम् ॥१
कुरुते हिमगिरिवनिता सुतां विविधभूषणभूषिताम् ॥ ध्रुवम् ।
सुविमलसुघने वितुलनजघने सा रसनमतिपीने ।
स्मरति सुमनसो[1] विकिरति बहुशोऽदृढगुणमिव बन्धने ॥२
विशदमुदारं वक्षसि हारं घटयति कनकामले ।
निन्दिततारं गङ्गासारं परमिव विबुधाचले ॥३
रक्तकरतलं मृदुभुजयुगलं ततमरकतकङ्कणम् ।
जलदवलयितं दिनकृतमुदितं रचयत इव नूतनम् ॥४
स्फुरति विशाले विलिखति भाले सुरुचिररुचिशोभने ।
सुललिततिलकं मृगमदकृनकं मृगमिव मृगलाञ्छने ॥५
जितघनमाले कुन्तलजाले विकलितमृगचामरे ।
विकिरति विमलां चम्पकमालां तडितमिव घनोदरे ॥६
इदमतिरुचिरं कथयति सुचिरं कुरु पदयुगचारणे ।
करुणां तारिणि ! विपदभिवारिणि कविजयनारायणे ॥७

वत्से ! भर्तृकृतं कुलप्रददया स्यादप्रियं वा प्रियं,
श्रेयः सम्मतया सुमर्षणमविस्मर्त्तव्यमेतच्चिरम्[2] ।
भर्त्तारं वशमानयागरवरं गङ्गाधरं सादरं,
मेनेत्युक्तवती विहाय तनयां मेने हृतं जीवितम् ॥१
नित्या सर्वगता द्वितीयरहिताऽप्याकारसावर्जिता,
सावित्रीति रमेति कल्पिततनू[3] राधेति[4] वाणीति च ।

१. 'पुमनसो' इति पाठः ।
२. '०मविस्मर्त्तुव्य०' इति पुस्तके पाठः ।
३. 'कल्पिततनु' इति पुस्तके ।
४. 'राद्येति' पाठः संभाव्यः ।

माता चेति गणेशितुः श्रुतिचयैर्या स्तूयतेऽनेकधा,
तां सृष्टिस्थितिसंहृतिप्रणयिनीं दुर्गां भजध्वं जनाः॥२

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते काशीप्रस्थानं नाम पञ्चमः पटलः ॥५॥

——

षष्ठः पटलः

ततो मृगेन्द्रं विजयाजयाभ्यामारुह्य काशीनगरीमुदारम् ।
उपागमत् सान्ततवर्त्मखेदा गङ्गाम्बुजारण्यजमन्दवातैः॥१

तोयाटताल वसन्तरागः

भ्रमरकदम्बविचुम्बितमल्लीवल्लीरचितनिकुञ्जम् ।
रमणीमण्डलमानविखण्डनपण्डितपरभृतगुञ्जम्[1] ॥१
विलसति विरहितजनकृततापं मधुसमये हरनगरवनम् ।
परमुन्मदमिथुनकपालम् । ध्रुवम् ।
मनसिजनृपतिच्छत्रसदृशनवविकसितसितशतपत्रम् ।
सुमधुरनिनदपतगवरमागधविपठितमदनचरित्रम् ॥२
मारुतचालितचामररुचिरशिरीषकुसुमसुविकाशम् ।
चित्रितविमलध्वजरवसुन्दरकेशरनिकरविलासम् ॥३
[2]शरदुपशीलनशीतपवनदरकम्पितविकसितबकुलम्[3] ।
युवजनभेदनलोहितप्रक्षितशरनिभकिंशुकमुकुलम् ॥४
पुष्पितसुललितनवमल्लीपरिरम्भिततरुणतमालम् ।
स्तवकपयोधरनम्रमनोहरनवकाशोकसुमालम् ॥५
[4]कुड्मलपुलकितचूतविलोकनमाधविकाकृतहासम् ।
पथिकहृदयतटपाटनपटुतरकेतकगणकर्णाशम् ॥६
अभिहितमेतज्जयनारायणकविना परमरहस्यम् ।
कुरुतां मुदितं परमविरामं बुधगणहृदयमवश्यम् ॥७

---

१. '०परिभृतगुञ्जम्' इति पुस्तके ।
२ 'सरदु०' इति पुस्तके ।
३. '०वकूलं' इति पाठः ।
४. 'कुटचल०' इति पुस्तके ।

[1]तास्ता दृष्ट्वा दुरा[पा]दमरपुरतो दुर्लभतरे,
पुरे वाराणस्यामुपवनगतं मन्मथरिपुम् ।
उवाचेदं कापि प्रियतमसखी शैलतनयां,
स्मितज्योत्स्नाजालस्नपितविलसद्दन्तवसना[2] ॥१

खवेराबादो ईमनरागः

इह सततमन्तसमये निखिलदेहिनां श्रवणपुटकेषु भवतारम् ।
नाम तव तत्त्वमयमादधतमुत्तमं विकसदभिनवपुलकभारम् ॥१
शिवे रम्यरूपे रूपय पुरान्तकमुदारम्
तव विरहसम्भरं सखि नयनकैतवं[3] दधतमिव दहनमनिवारम् । ध्रुवम् ।
तव वदनरुचिररुचिनिचयपरिचोरकं चन्द्रमपि तापसुनिदानम् ।
धरणिधरकुलतिलकपुत्रि विनिबिभ्रत[4] स्वीयशिरसि च निरवसानम् ॥२
श्रवणतटसीमसञ्चारिचललोचने लोचयितुमिव नयनसाम्यम् ।
तव विमलपाणिकमले च मृगशावकं सम्प्रति वहन्तमतिकाम्यम् ॥३
सजलघनकिरणचयनिन्दिनववेपिकाभ्रमत इव ते सदनुरागम् ।
स्वहृदि भृशविस्तृते मणिनिकरकोचिते दधानमयि वासुकिनागम् ॥४
त्वामृते विकलमिदमामनति काशीनगरममरसुदुरापम् ।
त्वमिममधुनाऽर्हसि स्वजनमनुरागिणं कर्तुमनुकारितापम्[5] ॥५
इदमचलराजतनय निजनभावितं भक्तजनमानसविहारम्[6] ।
शृणुत जयपूर्वनारायणविवर्णितं सन्त इह दोषपरिहारम् ॥६

सम्फुल्लचम्पकदलामलगौरगात्री,
कुन्दालिनिन्दिरुचिना गिरिशेन गौरी ।
रेजे ततः समुपगम्य तदासनार्द्धं,
वर्षात्यये जलधरेण तडिल्लतेव ॥१

---

१. 'ताता' इति पाठः पुस्तके ।
२. पुस्तके तु 'विलसंदत्रवसना' इति पाठः ।
३. पुस्तके तु-'नयनाकतवां' इति पाठः ।
४. 'विविविभ्रतं' इति पाठः ।
५. '०मनुषर्पा तापम्' इति पुस्तके । अनुकः=कामुक इत्यर्थः ।
६. '०मावसविहारम्' इति पाठः ।

अन्योन्यप्रतिबिम्बितं सुविमलानन्यासनासीनयो[1]—
यत्सम्मार्जितरत्ननिर्मितनवादश.भिरामच्छवि ।
पित्रोर्विश्वजनस्य रूपमनघं गाढानुरागात् स्फुटा[2]—
मन्योन्यान्तरगामितामिव सदा कुर्वञ्जगत् पातु तत् ॥२

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते वसन्तवर्णनं नाम षष्ठः पटलः ॥६॥

——

सप्तमः पटलः

अथ सान्द्रतरानन्द समुज्झिततनूरुहः[3] ।
जगा. पार्वतीं शम्भुः प्रेम्णा मधुरया गिरा ॥१

मूलतान कानोडारागः

सन्निधिमेत्य तवाऽहं गुणमयि सकलं कर्म चरामि ।
प्राणमयि त्वद्विरहित इव मृतवद्गहनमपि न भजामि ।।१
विमले मम देहे जीवनमधुना जातम् । ध्रुवम् ।
श्रुतिरसि मतिर्दृष्टिरसि त्वं प्रेयसि मम रसनाऽसि ।
पुष्टिस्तुष्टिरथापि भूषा स्मृतिरसि गन्धवहाऽसि ।।२
विकलितसुरकुलविषमगरलचयपाने या तु भवानि ।
मम जगतीजनमोहननिपुणा शक्तिः सा त्वममानि ।।३
तव विरहजनितमतुलं सुन्दरि दुःखं यदनुभवामि ।
सुखमपि दर्शनजं तत् किञ्चन पञ्चमुखः कथयामि ।।४
काशी धन्या कृतकतिपुण्या त्रिदशनगरसुदुरापम् ।
यदियमुपेति तवातुलपदकमलाङ्कितमपहतपापम् ।।५
श्रीजयनारायणकविकथितं काव्यमिदं तु न कस्य ।
परमां सम्पल्लहरीं[4] चेतसि जनयति जगति जनस्य ।।६

---

१. '०सीवयो' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'स्फुटात्' इति पाठः ।
३. 'समुज्झिषतनुरुहः' इति पुस्तके ।
४. 'सपदलहरीं' इति पाठः ।

इति ब्रुवन्तं निजवल्लभं ततः, समुल्लसत्प्रेमरसार्द्रचेतसम् ।
श्रुतिप्रमोदप्रतिपत्तिपेशला, जगाद गौरी मधुराक्षरा गिरः ॥१

तेयोटतालः खामाजरागः

विरहकृशां[1] तव मुखशशिदर्शनतोषविफुल्लकलेवराम् ।
जलधरजलधारापल्लवितां लतामिव भगविकलतराम् ॥१
जानीहि मामिदानीमधिगतसकलमनोरथाम् । ध्रुवम् ।
त्वामधिगम्य परमसुखसागरमग्नां चिरमभियाचितम् ।
दुर्गतिनोमिव निधिचयवर्षणमम्बरतः सहसागतम् ॥२
जीवननाथ ! विना भवताऽसून्[2] क्षणमपि धर्त्तुमशक्ताम्[3] ।
चन्दनतिलकामितमलयाख्यकगिरिणानन्यसुरक्ताम् ॥३
ध्यानवशादधिगम्य भवन्तं कथमपि रक्षितजीवनाम् ।
प्रागिव वर्षासमयाज्जलदं पिपासितचातकाङ्गनाम् ॥४
क्षीणतरां त्वामधुनाऽवाप्य प्रतिसमयागतशान्तिम् ।
शशधरलेखामिव तिथिभेदं दधतीमभिनवकान्तिम् ॥५
श्रीजयनारायणकविकृतमिति गीतं श्रुतिसुखकारणम् ।
शैलसुताचरणचारणानां[3] निदिशतु भवतो वारणम् ॥६

देवानां प्रणिपातनम्रशिरसां निर्भीतिसम्भाषणं,
भक्तानां च परेतराजविजयेऽप्याज्ञापनं वैरिणाम् ।
स्तम्भक्षोभणमोहनप्रमथने[4] संसिद्धमन्त्रोपमं,
पायाद्वो युधि वृत्तनृत्यगिरिजामञ्जीरसंशिञ्जितम् ॥१

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते शिवसम्भाषणं नाम सप्तमः पटलः ॥७॥

---

१. 'विरहकृतं ग' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'भवतासुन' इति पाठः ।
३. 'धर्त्तुमविशक्ताम्' इति पुस्तके ।
४. '०चारणाजां' इति पुस्तके ।
५. '०प्रयमने' इति पाठः ।

अष्टमः पटलः

पत्युः कदाचिदथ सा रहसि स्थितस्य,
सम्प्रार्थितस्य गुरुहर्षसमृद्धचेताः ।
आज्ञामवाप्य किल योगिगणावकीर्ण—
मेकाम्रनामविपिनं तरसा प्रतस्थे ॥१

ततो धृताऽऽभीरसुतासुवेशा (षा), निजप्रभाजालविकाशिताशा ।
अलम्बकारेश्वरपालितं तद्, वनं प्रसूनैः परिपूरितं सा ॥२

तेयोटताल धानश्रीरागः

मृदुलसमीरणशीतलसुललितनीपतले कृतचारा ।
शिवगुणकीर्त्तनपरमामोदनविगलितलोचनधारा ॥१
विहरति विपिनेऽखिलभुवनेशा धृतवल्लवतनयावेशा । ध्रुवम् ।
दोहनपात्रकवेत्रकवेणुविशोभितकरशतपत्रा ।
नीलनवीननिचोलवरा हरिचन्दनचर्चितगात्रा ॥२
अभिनवकुसुमविनिर्मितमालावलयितकवरीभारा ।
निन्दितमुक्ताफलगणलम्बितमल्लीकुड्मलहारा ॥३
अधरितनूतनपद्मरागरुचिविलसदशोकवतंसा ।
तत्प्रतिविम्बविचिह्नितचारुद्युतिभरसंवहदंशा ॥४
परिणतविम्बविडम्बितदशनच्छदगतसुविशदहास्या ।
हीरकखचितसुविद्रुमरचितवराटककनकमलास्या ॥५
सार्द्रालक्तकसुचरणविहरणसुरुचिरचिह्नचयेन ।
निचितं स्थलमिव तज्जनयन्ती लोहिततामरसेन ॥६
अभिनवविसवलयावलिभूषितवाहुयुगामृतभाषा ।
खगपतिचञ्चुकीर्त्तिनिवर्त्तनचत्वरमनोहरनासा ॥७
श्रीजयनारायणकविभाषितमिति नवरूपमुमायाः ।
ध्यायत भक्तजनाः सततं हृदि पापचयापहरायाः ॥८

तत्रोदञ्चन्मृदुमधुरवैर्वारिताशेषविश्व-
स्वान्तस्थैर्य्यं नवनवलसद्रागसार्थं ततः सा ।

पीयूषोद्भावयत उदधेर्मानविम्लानबीजं,
वक्त्राम्भोजे[1] प्रसृतपवनैः पूरयामास वेणुम् ॥१
माधुर्यैरवधोरितामृतरसं तं वेणुनादं मुहुः,
श्रुत्वा कर्णयुगं निहन्ति पशवो [2]व्यस्तास्ततो मानवाः ।
धातारं श्रवणद्वयं विदधतं निन्दन्ति वाञ्छन्ति च,
व्यालो नेत्रसहस्रतां च चकमे चक्षुःश्रवस्त्वं[3] वृषा[4] ॥२
[5]जगन्मातुर्लीलारसभरसमालोलमनसो,
मनोवृत्तिं ज्ञात्वा सुरभिरथ पातालपुरतः ।
पदं द्रष्टुं ध्यातुं विधिहरिहराद्यैः सुरगणै—
रुपागच्छत्तत्र स्वगणनिचयैः सम्परिवृता ॥३
सा[6] गोपतनयारूपधरां विश्वसवस्थलीम् ।
नत्वा जगाद तामेतत् प्रेम्णोत्फुल्लकलेवरा ॥४

सूरफाकताल चिडिरागः

निन्दितनूतनमिहिरविकाशे, भक्तहृदयतटतिमिरविनाशे ॥१
शैलसुते मम नतिरास्तां तव चरणे । ध्रुवम् ।
किल्विषदहनहुताशनजाते[7] तापविनाशामृतसम्पाते ॥२
नतसुरपतिमुकुटासितमणिना, तुलयति कमलं चुम्बितमलिना ॥३
वाञ्छाधिकफलविच(त)रणचतुरे, भ्रमरमहोरुहमानं छिदुरे ॥४
घोरभवार्णवतारणतरणौ, त्रिभुवननिःश्रेयसैकमरणौ[8] ॥५
विदधति शङ्करवक्षसि परमां, पद्मरागमणिवरयुगसुषमाम् ॥६
लोहितभासिनखरवरनिचिते, शोणकमल इव हिमकणललिते ॥७
जयनारायणभणितं गीतं, सुखयतु जगति श्रवणनिपीतम् ॥८

---

१. वक्ताम्भोजे' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'व्यस्तां' इति पाठः । व्यस्ताः = आकुला इत्यर्थः ।
३. पुस्तके तु चक्षुःश्रवन्त्व' इति पाठः ।
४. वृषा = इन्द्रः ।
५. 'जिगन्मातु०' इति पुस्तके पाठः ।
६. 'स' इति पुस्तके ।
७. '०हुतासनजाते' इति पाठः ।
८. '० निःश्रयमंक' इति पुस्तके । 'निःश्रयणैकमरणौ' इति सम्भाव्यः ।

घोरान्तःकरणाप्रधर्षणतमःस्तोमापसारामल —
वर्त्मा लोकमहौषधं त्रिजगतां पङ्कौघसंशोषणः ।
श्रीदुर्गाचरणारुणः स्फुटजवापुष्पाभिरामद्युति[1] —
र्युष्माकं हृदयाम्बरे समुदितो भूयाद् विपद्वारणः॥१

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते एकाम्रवनगमनं नाम अष्टमः पटलः ॥८॥

—

नवमः पटलः

तत्र सा कति दिनानि लीलया, धेनुपालनपरायणा सती ।
अध्युवास जगदीश्वरी वने, सिद्धचारणगणैः समाकुले ॥१

मध्यमानताल सारङ्गरागः

क्षुधितानवतृणकवलैरवति पिपासून्[2] शीतजलेन ।
आमन्त्रयति विपथमनुयातान् सुमधुरवेणुरवेण ॥१
सा विपिने शिवजाया धेनुगणान् परिचारयति ।
त्रिभुवनजनमोहनमाया ।ध्रुवम् ।
वत्सतरप्रतिविम्वविचिह्नितममलं मृदुलशरीरम् ।
निहिता[3] विनिवारयति करेण रणद्वलयेन गभीरम् ॥१
सम्मुखगतनिजवत्सतरानपहाय विवृत्य च तुष्टचा ।
लोकयतो मुहुरास्यविधुं सुखयन्ती सकरुणदृष्ट्या ॥३
मञ्जुलवञ्जुलकिसलयवुद्धचा कवलयतः पदयुगलम् ।
लालयते निजकरकमलेन च तेषां वपुरतिमृदुलम् ॥४
दोहं दोहं विमलपयांसि च तैस्त्रिपुरान्तकलिङ्गम् ।
अभिषिञ्चति परिफुल्लहृदयनलिना भुवनेश्वरसंज्ञम् ॥५
श्रीजयनारायणभणितैषा गीतिर्भक्तजनानाम् ।
हृदयतटं प्रतिवसतु सदा शिवजायागुणमुदितानाम् ॥६

---

१. '०पुष्पाभिराम०' इति पुस्तके ।
२. 'पिपासुन' इति पुस्तके पाठः ।
३. 'निहितो' इति पाठः ।

निःसाराच्चपलेन्द्रजालसदृशाद् भूयिष्ठकष्टाकरात्,
संसाराद् विनिवृत्य नृत्यपरमप्रीतिप्रदे सम्पदाम् ।
सर्वासां कुलमन्दिरे त्रिजगतां सारे सुरैर्वाञ्छिते,
भूयाद् वः सुरसुन्दरीपदयुगाम्भोजे मतिर्निर्मला ॥१

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते गोष्ठवर्णनं[1] नाम नवमः पटलः ॥९॥

——

दशमः पटलः

स्नेहेन देहार्द्धहरं हरप्रिया, हरं समुद्दिश्य विलोलमानसा ।
कामप्यसौ दुःखसुखांशभागिनमथाब्रवीदिन्दुमुखीं सखीमिति ॥१

खायारावादीताल हामीररागः

सकलकलापरिपूर्णसुधाकरदर्पदलनमुखकान्तिम् ।
विकचकमलरुचिलोचनवलनविधूतयुवतिजनशान्तिम् ॥१
त्रिभुवनहृदयानन्दनिधानं स्मरति सदा मम मन ईशानम् । ध्रुवम् ।
अभिनवभवदमृतनिकरमधुरिमगरिमविलोपनभाषम् ।
परिहृततरुणीमानतिमिर[तति]तरुणाधरगतहासम् ॥२
सुविशदपृष्ठतटावविलम्बिपिशङ्गजटापरिवारम् ।
स्फटिकशिलोच्चयतटमिव[2] कूटाद् विगलितधातुजधारम् ॥३
अवधीरितकरिवरकरजानुविलम्बिललितभुजदण्डम् ।
दशनवसनपरिलसदतिशोणिमनिन्दितविद्रुमखण्डम् ॥४
अमलस्थलकमलद्युतिचयविनिगञ्जनचरणविकाशम् ।
सुरतटिनीसलिलोर्म्मिपटलनिभसुवलीत्रितयविलासम् ॥५
ददतं विततललाटतटोपरि शिशिरकरं[3] समुदारम् ।
विजयकलितमिव रतिपतिसायकमर्द्धशशाङ्काकारम् ॥६

---

१. 'गोष्ठ०' इति पुस्तके ।
२. '०वटमिव' इति पुस्तके पाठः ।
३. 'शिशिरकरां' इति पाठः ।

भणितमिदं जयनारायणकविना परमेश्वररूपम् ।
गिरितनयोदितमादिशतु शुभं भक्तिमतामनुरूपम् ॥७

बाणानपाङ्गलसितानि शरासनं च,
भ्रूयुग्मकं श्रवणपालिमथास्य मौर्वीम् ।
कामं विजित्य जयसाधनवस्त्रजातं
तस्यैव मन्मथरिपुः स्वयमाप्तहार:[1] ॥१

प्रौढाङ्गनामृदुलकाङ्गमपाङ्गवह्नि[2]—
र्भस्मीकरोति[3] सखि कामरिपोर्न चित्रम्
भस्मीकृतं कुलवधूवधकण्ड्वनङ्ग
मङ्गीकरोति पुनरेव ममेति चित्रम् ॥२

त्वया हि काशीनगरीनिवासिनं, समानय क्षिप्रमिहेन्दुशेखरम् ।
इति प्रयुक्ता गिरिजातया तया, सखी समेत्य त्रिपुरारिमब्रवीत् ॥३

मध्यमानताल इंमनरागः

शिव शिव इति तव नाम सकामं जपति[4] यथेच्छफलदमविरामम् ॥१
शङ्करी शङ्कर ! तव विरहे । ध्रुवम् ।
दिक्षु विदिक्षु विलक्षणरूपं, [वि]लक्षति त्वां जीवनभूपम् ॥२
स्रस्तं स्रस्तं विषकृतविलयं, धवति सखी लंघितनिजनिलयम् ॥३
क्वानुभवामि भवं भवसारं, इति पृच्छति परिजनमनुवारम् ॥४
विलिखति धरणीं नतभुजकमला, श्वसितमनन्मिव विसृजति विकला ॥५
विरुवति परभृतयूथे विकलं, स्वमपि दधाति श्रुतिपुटयुगलम् ॥६
निन्दति मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जं, कलयति मलयजमिव विषपुञ्जम् ॥७
श्रीजयनारायणकविभणितं, जगतामपहरतु सकलदुरितम् ॥८

पीयूषद्युतिरप्यहो विसृजति क्ष्माभोच्चयं रश्मिभिः,
प्राणानर्त्तुमिव प्रसर्पति जगत्प्राणोऽप्यसौ सम्प्रति ।
तस्या वाडवहेतिकां वितनुते दुर्धर्षणीयां हिमं,
नास्त्यन्यो भवता विना स्मररिपो प्राणप्रदानप्रभुः ॥१

---

१. 'स्वयमानहार' इति पुस्तके । स्वयमाजहार' इति पाठः सम्भाव्यः
२. '०मृदुलकाङ्गन०' इति पुस्तके ।
३. 'भस्मीकरोत्व' इति पाठः पुस्तके ।
४. पुस्तके 'जयति' इति पाठः ।

ज्ञानानन्दनरूपिका[1] शिवमनःसन्तोषिका शोषिका,
पापानामथ पोषिका त्रिजगतामुत्पादिका हारिका।
भक्ते मुक्तिविधायिका रिपुकुलप्रोन्माथिका दीपिका,
या मोहप्रबलान्धकारहरणे सा पातु वश्चण्डिका ॥२

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते विरहवर्णनं नाम दशमः पटलः ॥१०॥

एकादशः पटलः

[2]लीलारसोल्लासितमानसायाः, प्राणप्रियाया अथ विश्वनाथः।
[3]सखीजनस्याहृतमर्थविज्ञः, श्रुत्वा द्रुतं तद्विपिनं जगाम ॥१॥
निवसामि निकुञ्जेऽस्मिन् समानय मम प्रियाम्।
इत्युक्ता[4] सा शिवेनाथ गौरीमेत्याब्रवीदिदम् ॥२॥

मध्यमानताल आडानारागः

वाति मलयजपवने प्रेमभरालसो, ध्यायति तव गमनं विकलितमानसः ॥१
सीदति विरही कुञ्जे सखि ! शशिमौलिः। ध्रुवम्।
उदयति शिशिरकिरणे तापभरमेति, विकसति कुसुमचये स्मरशरतो बिभेति ॥२
स्वनति कोकिलकुले हृदि शल्यमुपेति, सुविनदहंसकुलं यमचारमवैति ॥३
स्वपिति धरणीतले निन्दति कुसुमदाम, हृदये विरहविधुरे प्रलपति तव नाम ॥४
दिशतु करुणामुमा निजपदचरणे, कथयति गीतमिदं जयनारायणे ॥५

नान्यद्[5] ध्यायति संश्रृणोति वदति प्रत्येति पश्यत्यपि,
त्वद्विच्छेदनखेदकुण्ठकरणग्रामः सदा शङ्करः।
मन्ये कुञ्जगृहोदरे सखि ! जपंस्त्वन्नामतत्त्वं मनुं,
सर्वाभीप्सितदं तपः प्रचरति त्वत्प्राप्तिकामो[6]ऽनिशम् ॥१

---

१. पुस्तके 'ज्ञानानन्दरूपिका' इति।
२. पुस्तके तु 'नीला०' इति पाठः।
३. 'सखीजनस्य०' इति पाठः पुस्तके।
४. 'इत्युक्त्वा' इति पुस्तके।
५. 'न्यान्यत्' इति पाठः पुस्तके।
६. 'त्वत्प्राप्ति०' इति पुस्तके।

तेयोटताल विहागडाराग:

मृदुलसमीरे कुञ्जकुटोरे युवतिविमोहनवेशम् ।
अधिगतमिन्दुविमलमुखि ! सत्वरमनुचर तं परमेशम् ॥१
विकसितकुसुमे राजति विपिने चिन्तितश्रीभुवनेशः । ध्रुवम्
त्वदुपगमनपरमाकुलहृदयो दिशि दिशि विकिरति नेत्रम् ।
दिग्वनिताजनललितवतंसनमिव विकसितशतपत्रम् ॥२
कुञ्जं प्रविशति मुहुरपि विचरति वहिरतिचञ्चलनयनः ।
ध्वनति समदने मधुकरमिथुने शङ्कितनूपूररवणः ॥३
चिरविरहैरतितापितमानसमर्हसि रक्षितुमेतम् ।
सखि ! निजवल्लभमशरणमनुगतमुपसर कुञ्जनिकेतम् ॥४
श्रीजयनारायण इति गीतं भणति सतामभिरामम् ।
हिमगिरितनया दुःखितसदया शमयतु भवमविरामम् ॥५

ततः प्रियाप्रेमरसा[1]-नुरागिणी, चिरादवालोकनमुग्धलोचना ।
प्रफुल्लपुष्पं भ्रमरालिगुञ्जितं, जगाम कुञ्जं गजमञ्जुगामिनी ॥१

तोयाटताल जयजयन्तीराग:

शिव जय शिव जय भाषणशीला[2], गमनतिरस्कृतकुञ्जरलीला[3] ॥१
प्रविशति भुवनत्रयजननी सा, शिवयुतकुञ्जं प्रेमवशा । ध्रुवम्
निजकरविधृतसखीकरकमला, किरणचयैरवधीरितचपला ॥२
मुखशशधरनलिनामृतहासा, दलितहराक्षिचकोरपिपासा ॥३
मुखमारुतसुरभितसकलाशा, वारितमधुकरकमलप्रिया सा ॥४
जयनारायण इदमभिभणति, तारा करुणां कुरुतां नमति ॥५

या बुद्धिः प्रतिभा दया हृतभया माया च मेधा सुधा,
तुष्टिः पुष्टिरपि क्षमा च विकृतिः शान्तिश्च कान्तिस्तृषा ।
भुक्तिर्मुक्तिरथोक्तिराकृतिरपि श्रद्धा च विद्या त्रपा,
निद्रा सर्वशरीरिणामवतु सा विश्वं सदा शङ्करी ॥१

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते दूतीसंवादो नाम एकादशः पटलः ॥११॥

---

१. 'प्रेमरमा०' इति पुस्तके ।
२. '०शीलां' इति पाठः ।
३. '०लीलां' इति पाठः पुस्तके ।

द्वादशः पटलः

अत्रान्तरे तत्र पवित्रवेशा, शिवेन सार्द्धं गिरिराजपुत्री ।
विश्वत्रयामोदनमादधानां, प्रकाशयामास च रासलीलाम् ॥१

तेयाटताल केदाररागः

विलुलितवेणी शोभितरत्ना[1] यया जितसुशिखिशिखण्डः ।
तप्तकनकरुचिरोचितया रुचिनिन्दितहीरकखण्डः ॥१
विराजति रासमण्डले शिवया शिव एकाम्रवने । ध्रुवम् ।
अलकललितमुखमण्डलया मणिकुण्डलमण्डितगण्डः ।
कङ्कणराजितभुजलतया मणिचयराजितभुजदण्डः ॥२
चञ्चलचारुदृगञ्चलया विकचेन्दीवरनेत्रः ।
सुविशदहारविभूषितया वनमालावलयितगात्रः ॥३
नीलनवोनाम्बरधरया नवपीतनिचोलवसानः ।
करतालविलोलकराम्बुजया स्वरपूरितसुललितगानः ॥४
त्रिभुवनपित्रो रूपमिदं सुरनिकरैश्चिरमभिलषितम् ।
श्रीजयनारायणकविना परिचिन्तय हृदये भणितम् ॥५

अष्टाभिर्मिथुनैः सुचारुचरितं तत्तत्स्वदेहोद्भवै[2]—
स्तत्तद्रूपमनोहरैरनुपमं श्रीराससंमण्डलम् ।
तत्तद्वेश(ष)धरौ त्रिलोकपितरौ लीलोल्लसन्मानसौ,
श्रीदुर्गागिरिशौ तदन्तरगतौ संशोभयाञ्चक्रतुः ॥ १
ततो बहुविधे तत्र रासलीलामहोत्सवे ।
पार्वत्या परमप्रीत्या जगदे जगतीश्वरः ॥२

मध्यमानताल रागपरजः

जगदनुरञ्जनमनुपममलिकं भूषय मृगमदतिलकेन ।
शारदमतिरुचिरं परिमिलितं त्वं[3] शशधरमिव शशकेन ॥१
शशिशेखर ! कुरु कृपया मामभिनिचितां भूषया[4] । ध्रुवम्

१. 'शोभितराणि' इति पुस्तके ।
२. पुस्तके '०स्वदोहोद्भवे' इति पाठः ।
३ पुस्तके 'त्वं' शब्दो नास्ति किन्त्वेदभावे मात्राद्वयोनता स्यात्पदे ।
४. पुस्तके तु 'भूषयाम्' इति पाठः ।

विरचय गण्डयुगं मम परिहर[1] सुललितमृगमदपत्रकम् ।
उपरि विलसितमधुव्रतनिकरं विकसितमिव शतपत्रकम् ।।२
जमय चिकुरनिचयं कमलेक्षणनिचितं कुरुबकमालया ।
स्फुरदतिनीलकिरणमिव नीरदमभिनवस्थिरचञ्चलया ।।३
अनुरञ्जय मम जीवननाथ ! विलोचनमञ्जनलेखया ।
कमलोदरपरिखेलितखञ्जनमपलञ्जय हेलया ।।४
कटितटमीश ! विधेहि मनोहररसनापरिवलयितम् ।
उरसि[2] समर्पय निर्म्मलहारं कुरु करमपि कटकाचितम् ।।५
वर्णितमिति जयनारायणकविना विदधातु भुवनानाम् ।
कलुषविषमविषनाशनमनिशं कलिविषधरकवलितानाम् ।।६

ततो [3]भूधरराजस्य सुतया[4] प्रार्थितो यथा ।
प्रोल्लसत्परमप्रीतिः शङ्करोऽपि तथाऽकरोत् ॥१॥
विद्याधरीकिन्नरसुन्दरीणां, गणो गुणग्रामवदग्रगण्यः ।
शुश्रूषयाऽतोषयदाशु तत्र, सुखासनस्थावथ दम्पती[तौ][5] ॥२

तेयोटताल खामाजरागः

काऽपि च तावनुचालयते मृदुचामरमतिशयगौरम् ।
आतपवारणमुपरि दधाति च कांचन शशिकरचौरम् ।।१
गायति सुललितगानं काचन पूरितपञ्चममधुरिम-
खण्डित[6] पिककुलगानम् । ध्रुवम् ।
चन्दनकुंकुमपङ्कचयैरनुलिम्पति काऽपि तदङ्गम् ।
उरसि दधाति तयोरथ काऽपि कुसुमगुणमलिकृतसङ्गम् ।।२
वादयते बहुविधमपि वाद्यं काचन कर्णविनोदम् ।
नृत्यति कापि च शिल्पविशेषविवर्द्धितमानसमोदम् ।।३

---

१. 'परहर' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'उसि' इति पुस्तके ।
३. पुस्तके 'भुवर०' इति पाठः ।
४. 'सृत्या' इति पुस्तके ।
५. पुस्तके तु केवलं 'दम्पतौ' इत्येव पाठः।
६. 'खण्डति' इति पुस्तके ।

भावितमिति जयनारायणकविना कलयत शुभगानम् ।
भक्तजनाः सततं कविनरपतिमानसतोषनिदानम् ॥४

अत्रान्तरे तद्विपिनप्रवासिनस्तपोधना लोचनवारिवर्षिणः ।
स्वभक्तिभावेन तनूरुहाञ्चिता, बभाषिरे[1] तौ जगदीश्वराविति ॥१

तेयोटताल मालकोषरागः

त्रिभुवनदैन्यविनाशे सततं सकरुणचित्तौ,
मोहमहार्णवपतितान् दीनान् शरणविहीनान् ।
पापवारणवारणे [2]घोराङ्कुशपदकमलौ,
पापिजनाग्रविग्रान् विपथगकरणाधीनान् ॥१
तारयतं भवसिन्धौ वारयतं कलिकलुषात् ।
कुरुतं पितरौ कृपया विपयरसे विरतान्नः । ध्रुवम् ।
नानापथविकलानां जगतीनां च भवन्तौ,
सदयनमुपदेष्टारौ श्रुतमिदमागममुक्तम् ।
तत् किं नो दिशतोऽस्मान् प्रति कापथमनुयातान् ।
कल्मषकण्टकदलितान् मृषयत इति तदयुक्तम् ॥२
काचन गतिरिह नास्ते मायानिगडविमुक्त्यै,
युवयोः पदशरणमृते[3] निभृते निगमोदितमिति तत्त्वम् ।
अस्मान् यदि गतिहीनान् नो कृपयथ इह न तदा,
कैरपि घोषयितव्यं भवतोरगतिगतित्वम् ॥३
कृतगुरुपदयुगनतिना जयनारायणकविना,
कविकुलमुदे [सु]भणितं गीतं कुरुतां सुमतिम् ।
अचलमहीपतितनया चरणसरोजं भजतां,
शमयतु भवभयनिचयं सततं हरतु च कुमतिम् ॥४

इति स्तुतौ तौ वनचारिभिस्तैर्मनोऽनुकूलं वरमेव दत्त्वा ।
एभ्यो महाविस्मयमागतेभ्यस्तिरोदधाते शुभदौ जगत्याः ॥१

---

१. 'बभासिरे' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'घोराङ्गुश०' इति तु पुस्तके ।
३. 'पदशरणामृते' इति पुस्तके '

आसीद् ब्रह्मकुलोद्भूतः शिरो नाम महामतिः ।
तस्माज्जात उधो धीरस्ततः कोच इति स्मृतः ॥१
तत आभः समाजज्ञे सञ्जातश्च ततो पशः(यशः) ।
उदयश्च ततो जातस्ततो बाणेश्वरोऽभवत् ॥२०
तत्पुत्रो विश्वनाथोऽथ कंसारिस्तत्सुतो महान् ।
कंसारेस्तनयः श्रीमान् श्रीधरः परिकीर्त्तितः ॥३
यदुनाथस्ततो यज्ञे पाठकख्यातिमीयिवान् ।
गोपीकान्तस्तस्य पुत्रो रामकृष्णश्च तत्सुतः ॥४
राजेन्द्रस्तनयस्तस्य विष्णुदेवस्ततोऽभवत् ।
दुलालश्चापि कन्दर्पो विष्णुदेवसुतावुभौ ॥५
कन्दर्पात् कृष्णचन्द्रोऽभूद्, गुणवान् विजितेन्द्रियः ।
अभवत् कृष्णचन्द्रस्य जयनारायणः स्मृतः ॥६
अजायत सुतस्तस्य कालशङ्करसंज्ञकः ।
तस्य षट् तनयाः ख्याताः काशीकान्तोऽग्रजो महान् ॥७
सत्यप्रसादस्तदनु तृतीयः सत्यकिङ्करः ।
चतुर्थः सृ(स)त्यचरणो घोषालः परिकीर्त्तितः ॥८
पञ्चमः सत्यशरणः षष्ठः सत्यप्रसन्नकः ।
इति षण्णां कुमाराणां सत्यभक्तस्तु सप्तमः ॥९

सप्रज्ञानिषयानुरूपरचितं क्षेमङ्करं यन्मया,
सद्भक्ताय जयादिना द्विजनुषा[1]नारायणेनाचिरात् ।
क्रूराकारणदुर्विवादघटनात् पर्यस्यतां शङ्करी—
सङ्गीतं तदिदं सतां वितनुतां संशृण्वतां श्रीततिम्[2] ॥१०

इति श्रीशङ्करीसङ्गीते रासवर्णनं नाम द्वादशः पटलः ॥१२॥

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

संवत् १९६७ रा मार्गशीर्षमासे तिथौ तृतीयायां शनिवासरे । जोधपुरमध्ये ।
श्रीः । श्रीरस्तु । शुभम्भवतु । श्री । श्री ।

---

१. '०द्विजनुया' इति पुस्तके पाठः ।
२. 'श्रीततम्' इति पाठः पुस्तके ।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
के

नवीनतम प्रकाशन (सन् १९६७-६८)

नाम	सम्पादक	मूल्य
१. बालशिक्षा-व्याकरण	मुनि जिनविजय	७-७५
२. नृत्यरत्नकोश भाग २	श्री आर० सी० परीक	६-७५
३. चान्द्र-व्याकरण	पं० बेचरदास जे० दोसी	७-००
४. गोरा-बादल-चरित्र	मुनि जिनविजय	४-००
५. हम्मीर-महाकाव्य	मुनि जिनविजय	१५-००
६. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ४	श्री बदरीप्रसाद साकरिया	८-७५
७. मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह	१८-७५
८. आगमरहस्य पूर्वार्द्ध	श्री गंधाधर द्विवेदी	१५-००
९. शकुनप्रदीप	डॉ० फतहसिंह	१-००
१०. पाठ्यरत्नकोश	श्री गोपालनारायण बहुरा	३-५०
११. ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट III-B	मुनि जिनविजय	४८-७५
१२. नन्दोपाख्यान	डॉ० फतहसिंह	१-००
१३. राठौड़ां री वंशावली एवं राठौड़ वंश री विगत	डॉ० फतहसिंह	२-१५
१४. चण्डीशतक टीकाद्वयसहित	श्री गोपालनारायण बहुरा	५-२५
१५. कविकौस्तुभ	डॉ० फतहसिंह	२-००
१६. मीरां बृहत्पदावली प्रथम भाग	पुरोहित हरिनारायण	७-५०
१७. स्थूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१-७५
१८. राजस्थानी वीरगीत-संग्रह प्रथम भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-५०
१९. गजगुणरूपकबन्ध	श्री सीताराम लालस	९-००

सन् १९६८-६९ के प्रकाशन

२०. वैताल-पचीसी	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३-५०
२१. मारवाड़ रा परगना री विगत प्रथम भाग	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५-५०
२२. राजस्थानी वीरगीत-संग्रह द्वितीय भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-२५
२३ देवीचरित प्रथम भाग	श्री हुक्मचन्द चतुर्वेदी	१३-२५
२४. राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	५-००
२५. सिन्धुघाटी की लिपि में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक	डॉ० फतहसिंह	५-००
२६. शङ्करीसङ्गीतम्	श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	१-२५
२७ संघपति सोमजी रूपजी प्रशस्ति	म० विनयसागर	
२८. सनत्कुमारचक्रिचरितमहाकाव्य	म० विनयसागर	११-५०

प्राप्तिस्थान
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)